Faramee e Ameer e Ahlesunnat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 471
Weekly Booklet : 741

फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुख़्तलिफ़ किताबों से लिये गये)

(सफ़ह़ात : 17)

ईमान का चोर कहां आता है ? 04

शैत़ान का सब से बड़ा और बुरा हथियार 08

दिल को मुर्दा करने वाला एक काम 11

ना क़ाबिलिय्यत की सब से बड़ी दलील 17

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत

दुआए ख़लीफ़ए अमीरे अहले सुन्नत : या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़हात का रिसाला "फ़रामीने अमीरे अहले सुन्नत" पढ़ या सुन ले उसे इन फ़रामीन को समझने और इन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, उस के ज़ाहिरो बातिन को अच्छा कर और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे।

اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

हज़रते अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से रिवायत है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए। सज्दे को इतना तवील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह पाक ने रूहे मुबारका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा, जब सरे अक़्दस उठाया तो फ़रमाया : "ऐ अ़ब्दुर्रहमान ! क्या हुवा ?" मैं ने अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : "जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा : क्या आप को येह बात ख़ुश नहीं करती कि अल्लाह पाक फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलामती उतारूंगा।"

(مُسندِ امام احمد، 406/1، حدیث:11662)

ज़माने वाले सताएं, दुरूदे पाक पढ़ो   जहां के ग़म जो रुलाएं, दुरूदे पाक पढ़ो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

किताब “कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” से 28 मदनी फूल

﴾1﴿ जो दुनिया से ईमान सलामत ले जाने में कामयाब हुवा वोही ह़क़ीक़ी मानों में कामयाब (है) और जो जन्नत को पा ले वोह बा मुराद है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 7)

﴾2﴿ हर एक को अपने बारे में येह ख़ौफ़ रखना चाहिए कि कहीं ऐसा न हो कि मुझ से कोई ऐसा क़ौल या फ़ेल सादिर हो जाए जिस के सबब مَعَاذَاللّٰه ! ईमान बरबाद हो जाए और किया कराया सब अकारत (यानी ज़ाएअ़) जाए।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 30)

﴾3﴿ दीन के मुतअ़ल्लिक़ जो बात यक़ीनी त़ौर पर मालूम हो वोही बयान करनी चाहिए, ज़ियादा अ़क़्ल के घोड़े दौड़ाना ईमानियात के मुआ़मले में इन्तिहाई ख़त़रनाक होता है कि ठोकर लगने पर आदमी बसा औक़ात कुफ़्रिय्यात की गहरी खाई में जा पड़ता है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 33)

﴾4﴿ जो लोग दुनिया ही को अपना सब कुछ बना बैठते, मौत को भुला बैठते और नेक लोगों से रिश्ता तुड़ा बैठते हैं वोह आ़म त़ौर पर बे लगाम होते हैं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 117)

﴾5﴿ परेशान ह़ाल को चाहिए कि अल्लाह पाक की रिज़ा पर राज़ी रहे और अपने आप को समझाते हुए दिल ही दिल में कहे कि शहीदाने व असीराने करबला رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهُم पर जो मुसीबतें आई थीं वोह यक़ीनन मुझ पर आने वाली मुसीबतों से करोड़ों गुना ज़ियादा थीं मगर उन्हों ने हंसी ख़ुशी बरदाश्त कीं और सब्र कर के जन्नत के ह़क़दार बने। मैं कहीं बे सब्री कर के आख़िरत की सआ़दत से मह़रूम न हो जाऊं ! (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 122,123)

«6» तक्लीफ़ पर सब्र कर के अज्र हासिल करना चाहिए क्यूंकि आफ़ात व बलिय्यात, कफ़्फ़ारए सय्यिआत (यानी गुनाहों का कफ़्फ़ारा) और बाइसे तरक़्क़िए दरजात होती हैं। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 126)

«7» अमरद (यानी ख़ूबसूरत लड़का) तो आग है आग ! शहवत के बा वुजूद अमरद का क़ुर्ब, उस की दोस्ती, उस के गले में हाथ डालना, उस के साथ मज़ाक़ मस्ख़री, आपस में कुश्ती, खींचा तानी और लिपटा लिपटी जहन्नम में झोंक सकती है। अमरद से दूर रहने ही में आ़फ़ियत है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 156)

«8» दुनियवी आफ़त व मुसीबत मुसलमान के ह़क़ में अक्सर बहुत बड़ी नेमत होती है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 162)

«9» गाड़ियों, इ़मारतों, दौलतों, सेह़तों और त़रह़ त़रह़ की नेमतों की अपने ऊपर कसरतों को देख कर डर जाना चाहिए कि कहीं येह दुनिया में नेकियों की जज़ा न हो और ग़ुर्बतों, आफ़तों, बीमारियों और त़रह़ त़रह़ की मुसीबतों का अपने ऊपर सिल्सिला देख कर सब्र करना और दिल बड़ा रखना चाहिए कि हो सकता है येह आख़िरत की राह़त सामानियों का पेश ख़ैमा हो। अल्लाह पाक से हम दोनों जहां की भलाइयां त़लब करते हैं। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 163)

«10» मुसीबतों की वजह से अल्लाह पाक पर एतिराज़ कर के ख़ुद को हमेशा के लिए जहन्नम के ह़वाले कर देने वाला शख़्स बहुत ही बड़ा बदनसीब है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 165)

«11» बिला ज़रूरत मुसीबत का इज़्हार करना अच्छी बात नहीं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 169)

«12» सिर्फ़ अम्बिया व मुरसलीन عَلَيۡهِمُ السَّلَام, सहाबा व ताबेईन عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان और औलियाए कामिलीन رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡهِم का ही इम्तिहान नहीं लिया जाता, आम मुसलमान भी आज़माए जाते हैं और फिर सब्र कर के ख़ूब अज्र कमाते हैं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 172)

«13» आलिमे दीन की शाने अज़मत निशान में बे अदबी से बचना बहुत ज़रूरी है। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 352)

«14» अह़कामे शरीअ़त के मुआमले में ज़बान और दिल को बहुत क़ाबू में रखने की ज़रूरत है कहीं ऐसा न हो कि मामूली सी लग़्ज़िश हमेशा के लिए जहन्नम में पहुंचा दे। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 365)

«15» अल्लाह पाक के दिए हुए माल से फ़र्ज़ हो जाने की सूरत में ख़ुश दिली के साथ ज़कात अदा करनी चाहिए कि इस में दुनिया व आख़िरत की बे शुमार भलाइयां हैं। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 383)

«16» जहां मालो दौलत का ज़ोर होता है वहां चोर आता है और जहां कामिल ईमान होता है वहां ईमान का चोर शैत़ान आता है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 426)

«17» बुरी सोह़बत बुरा रंग लाती है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 428)

«18» दुनिया की बे इन्तिहा मह़ब्बत, ह़लाल व ह़राम की परवा किए बग़ैर धन कमाने की धुन और गुनाहों की कसरत की नुह़ूसत बसा औक़ात दिल से दीन व ईमान की क़द्रो मन्ज़िलत निकाल देती, कुफ़्र पर ख़ातिमे का सबब बनती और हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग में झोंक देती है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 456)

﴾19﴿ अल्लाहु ग़फ़्फ़ार जब बख़्शने पर आता है तो बड़े से बड़े गुनहगार को बे ह़िसाब बख़्श देता है और जब गिरिफ़्त फ़रमाना चाहता है तो ब ज़ाहिर छोटे से गुनाह पर भी पकड़ लेता है लिहाज़ा अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की रह़मत से हरगिज़ हरगिज़ मायूस नहीं होना चाहिए और उस की ख़ुफ़िया तदबीर से बे ख़ौफ़ भी नहीं रहना चाहिए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 483)

﴾20﴿ जिस का फूल जैसा बच्चा अचानक फ़ौत हो जाए उस का सदमा वोही समझ सकता है, मगर वावेला मचाने, चीख़ने चिल्लाने से बच्चा वापस नहीं आता, सब्र करना चाहिए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 490)

﴾21﴿ जिस को ईमान की ह़िफ़ाज़त अ़ज़ीज़ हो उसे चाहिए कि वोह मिज़ाह़िया चुटकुलों की कैसिटों, फ़िल्मों, ड्रामों, गानों बाजों रूमानी और जासूसी नाविलों, डाइजिस्टों, इ़श्क़िया व फ़िस्क़िया अफ़्सानों और अख़बारों की ग़ैर शरई़ तह़रीरों वग़ैरा के क़रीब भी न फटके। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 501)

﴾22﴿ हर इस्लामी भाई को चाहिए कि वोह अच्छी सोह़बत इख़्तियार करे, सिर्फ़ और सिर्फ़ उ़लमाए अहले सुन्नत के मज़ामीन और उन्हीं की किताबों का मुत़ालआ़ करे। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 501)

﴾23﴿ ज़ियादा बोलने वाले, ग़ैर सन्जीदा और मज़ाक़ मस्ख़री के आ़दी की ज़बान से फ़ुज़ूलियात के साथ साथ कुफ़्रिय्यात निकलने के काफ़ी ख़त़रात रहते हैं। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त हमें संजीदगी और कम गोई की सआ़दत इ़नायत करे।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 507)

﴾24﴿ हर अ़मल अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ मह़ज़ रब्बे लम यज़ल की रिज़ा के लिए करना चाहिए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 534)

﴾25﴿ हर एक के साथ उस के ज़र्फ़ के मुताबिक़ बात करनी चाहिए कि गहरी बातें उस को तश्वीश में डालतीं बल्कि राह से भटका सकती हैं।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 558)

﴾26﴿ ज़बान को बहुत संभाल कर चलाना ज़रूरी है कि जब येह क़ैंची की तरह़ चलती है तो इस से कुफ़्रिय्यात सादिर होते देर नहीं लगती।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 598)

﴾27﴿ हमें शैत़ान के वार को नाकाम बनाते हुए हर दम बा अ़मल अ़ालिमों के दामन से वाबस्ता रहना चाहिए ताकि दीनी मालूमात होती रहें वरना शैत़ान कहीं ईमान छीनने में कामयाब न हो जाए। (कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 659)

﴾28﴿ उ़लमाए रब्बानिय्यीन की बारगाहों में ह़ाज़िरी तौबा की तौफ़ीक़ मिलने और ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिए कुढ़ने का सबब बन सकती है।

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 662)

किताब "मदनी पंजसूरह" से 4 मदनी फूल

﴾1﴿ अपने नेक और जाइज़ कामों में बरकत दाख़िल करने के लिए हमें पहले بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط ज़रूर पढ़ लेना चाहिए। (मदनी पंजसूरह, स. 3)

﴾2﴿ दुआ़ राईगां (यानी ज़ाएअ़) तो जाती ही नहीं, इस का दुनिया में अगर असर ज़ाहिर न भी हो तो आख़िरत में अज्रो सवाब मिल ही जाएगा लिहाज़ा दुआ़ में सुस्ती करना मुनासिब नहीं। (मदनी पंजसूरह, स. 184)

﴾3﴿ फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा नफ़्ल रोज़ों की भी आ़दत बनानी चाहिए कि इस में बे शुमार दीनी व दुनियवी फ़वाइद हैं। (मदनी पंजसूरह, स. 293)

﴾4﴿ जिन के वालिदैन या उन में से कोई एक फ़ौत हो गया हो तो उन को चाहिए कि उन की त़रफ़ से ग़फ़्लत न करे, उन की क़ब्रों पर भी ह़ाज़िरी देता रहे और ईसाले सवाब भी करता रहे। (मदनी पंजसूरह, स. 394)

किताब "ग़ीबत की तबाहकारियां" से 15 मदनी फूल

﴾1﴿ ग़ीबतों और गुनाहों भरी बातों से रिश्ता तोड़िए और अल्लाह पाक की यादों, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नातों से रिश्ता जोड़िए। ख़ूब दुरूदो सलाम के लिए ज़बान का इस्तिमाल कीजिए और ख़ूब ख़ूब तिलावते क़ुरआने पाक कीजिए और सवाब का ढेरों ख़ज़ाना ह़ासिल कीजिए। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 37)

﴾2﴿ ग़ीबत की तबाहकारियों में से येह भी है कि उस की नुह़ूसत से इ़बादत की नूरानिय्यत रुख़्सत हो जाती है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 38)

﴾3﴿ अ़वामो ख़वास हर एक को चाहिए कि मोह़तात़ ज़िन्दगी गुज़ारें ऐसे मुबाह़ आमाल व अफ़्आ़ल से भी अपने आप को बचाएं जो कि फ़त्ह़े बाबे ग़ीबत यानी ग़ीबत का दरवाज़ा खुलने का सबब बनें। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 83)

﴾4﴿ शमातत (यानी मुसलमान की तक्लीफ़ पर ख़ुशी के इज़्हार) से परहेज़ कीजिए। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 119)

﴾5﴿ जब कोई मुसलमान किसी गुनाह से तौबा कर ले तो अब उस गुनाह के बारे में उस को शर्मिन्दा नहीं करना चाहिए। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 129)

﴾6﴿ बेजा बक बक की आ़दत आदमी को न बोलने का बुलवाती और नाकों चने चबवाती है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 129)

﴾7﴿ مَعَاذَ الله ! सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُم को गालियां देना गुनाह, बहुत सख़्त गुनाह, क़त़्ई ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 196)

﴾8﴿ ज़बान अगर्चे बज़ाहिर गोश्त की एक छोटी सी बोटी है मगर येह ख़ुदाए रहमान की अज़ीमुश्शान नेमत है। इस नेमत की क़द्र तो शायद गूंगा ही जान सकता है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 222)

﴾9﴿ ज़बान का दुरुस्त इस्तिमाल जन्नत में दाख़िल और ग़लत़ इस्तिमाल जहन्नम से वासिल कर सकता है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 222)

﴾10﴿ नेक बन्दों के साथ दुआ में शिर्कत बहुत बड़ी सआदत है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 258)

﴾11﴿ किसी मुसलमान के मुतअल्लिक़ झटपट ग़लत़ राय नहीं क़ाइम कर लेनी चाहिए, हमें क्या मालूम कि अल्लाह की बारगाह में किस का क्या मक़ाम है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 345)

﴾12﴿ हमेशा ह़लाल रोज़ी कमाना, खाना और खिलाना चाहिए। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 379)

﴾13﴿ इन्फ़िरादी कोशिश दीनी कामों की जान है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 458)

﴾14﴿ इन्फ़िरादी कोशिश की रूह मिलनसारी है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 458)

﴾15﴿ इन्फ़िरादी कोशिश वाले के लिए मुख़ात़ब (यानी जिस से बात कर रहा है उस) की नफ़्सियात परखना बेहद ज़रूरी है। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. 458)

किताब "पर्दे के बारे में सुवाल जवाब" से 7 मदनी फूल

﴾1﴿ ख़ावन्द अपनी बीवी का, बाप अपने बच्चों का और हर शख़्स अपने अपने मातह़तों का एक त़रह़ से "ह़ाकिम" है और हर ह़ाकिम से उस के मातह़तों के बारे में बरोज़े मह़शर बाज़ पुर्स होगी। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 61)

﴾2﴿ शैत़ान के पास मर्दों को बरबाद करने के लिए सब से बड़ा और बुरा हथियार "औ़रत" है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 97)

﴾3﴿ मियां बीवी को चाहिए कि आपस में रवादारी व महब्बत से रहें, दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ पर नज़र रखें और उन को अदा भी करते रहें।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 118)

﴾4﴿ मुसलमानों की तरक़्क़ी में पर्दा नहीं दर ह़क़ीक़त बे पर्दगी रुकावट बनी हुई है। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 152)

﴾5﴿ शरई पर्दा (यानी इस्लामी पर्दा) तर्क न किया जाए कि येह अ़ज़ीम नेकी है और बे पर्दगी सख़्त गुनाह (है)। (पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 198)

﴾6﴿ अपने से कम मरतबा फ़र्द से दुआ़ करवाना अम्बिया व मुरसलीन عَلَيۡهِمُ السَّلَام और बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللهِ عَلَيۡهِم का त़रीक़ा रहा है।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 305)

﴾7﴿ सिदक़े दिल से मांगी जाने वाली दुआ़एं अल्लाह व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेहरबानी से क़बूल होतीं, इल्तिजाएं सुनी जातीं और मुरादें बर आती हैं।

(पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 306)

किताब "नमाज़ के अह़काम" से 3 मदनी फूल

﴾1﴿ हमें सुन्नतों पर अ़मल त़िब्बी फ़वाइद पाने के लिए नहीं सिर्फ़ सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की ख़ात़िर करना चाहिए। (नमाज़ के अह़काम, स. 93)

﴾2﴿ मुसलमानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी (यानी फ़ुज़ूल सजावट वग़ैरा) के बजाए आख़िरत की ह़क़ीक़ी बेहतरी (यानी आख़िरत संवारने) पर नज़र रखनी चाहिए। (नमाज़ के अह़काम, स. 114)

﴾3﴿ वोह मुसलमान बड़ा बदनसीब है जो दुरुस्त क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना नहीं सीखता। (नमाज़ के अह़काम, स. 211)

किताब “फ़ैज़ाने नमाज़” से 13 मदनी फूल

﴾1﴿ जब कोई मुसीबत आ जाए या बला नाज़िल हो या कोई नाज़ुक मुआमला दरपेश हो तो फ़ौरन नमाज़ का सहारा ले लेना चाहिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 25)

﴾2﴿ अल्लाह पाक अपने नेक बन्दों के तुफ़ैल लोगों से आफ़ात व अ़ज़ाबात दूर करता है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 53)

﴾3﴿ हो सके तो जगह बदल बदल कर नमाज़ पढ़नी चाहिए, जहां जहां नमाज़ पढ़ेंगे ज़िक्रो दुरूद करेंगे वोह तमाम मक़ामात क़ियामत के रोज़ गवाही देंगे। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 66)

﴾4﴿ बेशक नमाज़ निहायत अ़ज़ीमुश्शान इ़बादत है इस की बरकत से सिर्फ़ और सिर्फ़ बदनसीब लोग ही मह़रूम रह सकते हैं। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 71)

﴾5﴿ बन्दे को चाहिए कि वोह जिस क़दर हो सके अपनी नेकियां छुपाए। अपने नफ़्ल रोज़े, नमाज़, ह़ज व उ़मरह, सदक़ा व ख़ैरात, दीनी ख़िदमात वग़ैरा का बिला वजह ढिन्डोरा नहीं पीटना चाहिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 79)

﴾6﴿ जब कभी ख़ुशी की ख़बर मिले दो रक्अ़त नमाज़ शुक्राना अदा करना या सज्दए शुक्र कर लेना चाहिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 273)

﴾7﴿ नमाज़ इत़्मीनान व सुकून से पढ़नी चाहिए ताकि वोह क़बूलिय्यत की मन्ज़िल तक पहुंच सके। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 322)

﴾8﴿ अगर आप ख़ुशूओ ख़ुज़ूअ़ से नमाज़ें पढ़ना चाहते हैं तो सब से पहले गुनाहों से परहेज़ कीजिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 341)

﴾9﴿ नमाज़ में ख़ुशूअ़ लाने के लिए जो भी शै ख़ुशूअ़ में ख़लल डालती हो मुम्किना सूरत में उसे दूर कर दीजिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 417)

﴾10﴿ ज़ियादा हंसना ग़फ़्लत में डालने वाला ग़ैर मुनासिब और दिल को मुर्दा कर देने वाला काम है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 347)

﴾11﴿ क़ब्रिस्तान का वीराना दुनिया की आसाइशों और तमाम तर राह़त सामानियों की बरबादियों का पता देता है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 477)

﴾12﴿ अल्लाह के नेक बन्दों की नेकियों उन की सोह़बतों और उन की दुआओं से दूसरों को नफ़ा पहुंचता है। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 488)

﴾13﴿ बेशक जन्नत अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बहुत बड़ी नेमत है हम सभी को उसे पाने की तमन्ना करनी और उस के त़लब में ख़ूब इ़बादत करनी और नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िले की ख़ूब उम्मीद रखनी चाहिए। (फ़ैज़ाने नमाज़, स. 539)

किताब "बयानाते अ़त्तारिया (जिल्द : 1)" से 16 मदनी फूल

﴾1﴿ जो दुनियावी नेमत से दिल लगाता है वोह ग़फ़्लत का शिकार हो कर रह जाता है। (रिसाला : गफ़्लत, स. 19। बयानाते अ़त्तारिया, 1/19)

﴾2﴿ ग़फ़्लत बन्दे को रब्बुल इ़ज़्ज़त से दूर कर देती है।

(रिसाला : गफ़्लत, स. 19। बयानाते अ़त्तारिया, 1/19)

﴾3﴿ दुनिया की हर आसाइश में आज़्माइश है।

(रिसाला : ख़ज़ाने के अम्बार, स. 10। बयानाते अ़त्तारिया, 1/75)

﴾4﴿ जिसे माले दुनिया मिलने के साथ साथ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा भी मिल गया वोह सआ़दत मन्द ठहरा।

(रिसाला : ख़ज़ाने के अम्बार, स. 24। बयानाते अ़त्तारिया, 1/89)

﴾5﴿ मालो दौलत की मह़ब्बत इन्सान को ख़्वारी व ज़िल्लत के अ़मीक़ (यानी गहरे) गढ़े में धकेल देती है। (रिसाला : ख़ज़ाने के अम्बार, स. 25। बयानाते अ़त्तारिया, 1/90)

﴾6﴿ अ़क़्लमन्द वोही है जो मौत से क़ब्ल मौत की तय्यारी करते हुए नेकियों का ज़ख़ीरा इकठ्ठा कर ले।

(रिसाला : बादशाहों की हड्डियां, स. 11 । बायानाते अ़त्तारिया, 1/116)

﴾7﴿ दुनिया व आख़िरत की परेशानियों का ह़ल अल्लाह पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी में है।

(रिसाला : कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात, स. 17 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/142)

﴾8﴿ मुसलमान का हर काम अल्लाह और उस के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी के लिए होना चाहिए।

(रिसाला : कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात, स. 16 । बयानाते आ़त्तारिया, 1/141)

﴾9﴿ हमेशा नमाज़े बा जमाअ़त का एहतिमाम कीजिए हरगिज़ कोताही न फ़रमाइए। (रिसाला : कफ़न चोरों के इन्किशाफ़ात, स. 24 । बयानाते आ़त्तारिया, 1/146)

﴾10﴿ किसी को भी अपने इ़ल्म या इ़बादत पर नाज़ नहीं करना चाहिए।

(रिसाला : बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 18 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/169)

﴾11﴿ ईमान की ह़िफ़ाज़त की दुआ़ से ग़फ़्लत नहीं करनी चाहिए।

(रिसाला : मुर्दे के सदमे, स. 23 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/234)

﴾12﴿ जामेअ़ शराइत़ पीर से बैअ़त कर के उस की मुस्तक़िल दुआ़ओं की पनाह में आ जाना चाहिए। (रिसाला : मुर्दे के सदमे, स. 23 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/234)

﴾13﴿ सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की मह़ब्बत व निस्बत भी अ़ज़ाबे क़ब्र से बचा लेती है।

(रिसाला : मुर्दे के सदमे, स. 26 । बयानाते अ़त्तार, 1/237)

﴾14﴿ दौलत से दवा तो मिल सकती है लेकिन शिफ़ा ख़रीदी नहीं जा सकती।

(रिसाला : क़ियामत का इम्तिह़ान, स. 19 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/331)

《15》 दौलते दुनिया को अपना सब कुछ समझ बैठना दानिशमन्दी (यानी अ़क़्ल मन्दी) नहीं। (रिसाला : क़ियामत का इम्तिह़ान, स. 25 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/337)

《16》 रिज़्क़े ह़लाल की त़लब में हरगिज़ ऐसी मसरूफ़ियत मत रखिए जो नमाज़ों से ग़ाफ़िल कर दे। (रिसाला : क़ियामत का इम्तिह़ान, स. 25 । बयानाते अ़त्तारिया, 1/337)

किताब "बयानाते अ़त्तारिया (जिल्द : 2)" से 21 मदनी फूल

《1》 जिन ख़ुश नसीबों के मां बाप ज़िन्दा हैं उन को चाहिए कि रोज़ाना कम अज़ कम एक बार उन के हाथ पांव ज़रूर चूमा करें।

(रिसाला : समुन्दरी गुम्बद, स. 5 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/24)

《2》 मां या बाप की आवाज़ पर हरगिज़ अपनी आवाज़ बुलन्द न होने दीजिए।

(रिसाला समुन्दरी गुम्बद, स. 5 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/24, 25)

《3》 वालिदैन के ह़ुक़ूक़ बहुत ज़ियादा हैं उन से बरियुज़्ज़िम्मा होना मुम्किन नहीं है। (रिसाला समुन्दरी गुम्बद, स. 12 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/31)

《4》 वोह शख़्स बड़ा ख़ुशनसीब है जो मां बाप को ख़ुश रखता है।

(रिसाला समुन्दरी गुम्बद, स. 15 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/34)

《5》 हर एक को चाहिए कि अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव करे और बिला मस्लह़ते शरई़ उन के एह़तिराम में कमी न करे।

(रिसाला : एह़तिरामे मुस्लिम, स. 17 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/69)

《6》 एह़तिरामे मुस्लिम का तक़ाज़ा येह है कि हर ह़ाल में हर मुसलमान के तमाम ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखा जाए।

(रिसाला : एह़तिरामे मुस्लिम, स. 26 । बयानाते अ़त्तारिया, 2/78)

﴾7﴿ जब इन्सान अपने आप को "अहम" न समझे तो उसे किसी के न "पूछने" का ग़म भी नहीं पहुंचता।

(रिसाला : शैतान के बाज़ हथियार, स. 14। बयानाते अ़त्तारिया, 2/13)

﴾8﴿ मुसलमान दूसरे मुसलमान का मुह़ाफ़िज़ और ग़मख़्वार होता है।

(रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 25। बयानाते अ़त्तारिया, 2/196)

﴾9﴿ लड़ना झगड़ना मुसलमान का शेवा (यानी त़रीक़ा) नहीं।

(रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 25। बयानाते अ़त्तारिया, 2/196)

﴾10﴿ जिस के साथ लोग ज़ियादा मुन्सलिक होते हैं उस से बन्दों की ह़क़ तल्फ़ियों के सुदूर का इम्कान भी ज़ियादा होता है।

(रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 52। बयानाते अ़त्तारिया, 2/223)

﴾11﴿ मुसलमानों की दिलजोई की निय्यत से छोटों के साथ मुश्फ़िक़ाना और बड़ों के साथ मुअद्दबाना लहजा रखिए।

(रिसाला ज़ुल्म का अन्जाम, स. 59। बयानाते अ़त्तारिया, 2/230)

﴾12﴿ बात चीत करते हुए बल्कि किसी भी ह़ालत में क़हक़हा न लगाइए कि सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी क़हक़हा नहीं लगाया।

(रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 60। बयानाते अ़त्तारिया, 2/231)

﴾13﴿ हमेशा मुख़ात़ब के ज़र्फ़ और उस की नफ़्सियात के मुत़ाबिक़ बात की जाए। (रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 62। बयानाते अ़त्तारिया, 2/233)

﴾14﴿ बदज़बानी और बे ह़याई की बातों से हर वक़्त परहेज़ कीजिए।

(रिसाला : ज़ुल्म का अन्जाम, स. 62। बयानाते अ़त्तारिया, 2 /233)

﴾15﴿ ह़या की नश्वो नुमा में माह़ौल और तरबियत का बहुत अ़मल दख़्ल है।

(रिसाला : बाह़या नौजवान, स. 12। बयानाते अ़त्तारिया, 2/326)

﴾16﴿ ह़या जितनी ज़ियादा हो उतनी ही अच्छी है।

(रिसाला : बाह़या नौजवान, स. 15। बयानाते अ़त्तारिया, 2/329)

﴾17﴿ बाह़या हमेशा बा अदब भी होता है।

(रिसाला : बाह़या नौजवान, स. 58। बयानाते अ़त्तारिया, 2/372)

﴾18﴿ बाह़या ख़वातीन ख़्वाह कुछ भी हो जाए बे पर्दगी नहीं किया करतीं।

(रिसाला : ज़ख़्मी सांप, स. 8। बयानाते अ़त्तारिया, 2/431)

﴾19﴿ ह़क़ीक़त तो येह है कि इन्सान का ज़ाहिर उस के दिल का नुमाइन्दा है।

(रिसाला : इस्लामी पर्दा, स. 9। बयानाते अ़त्तारिया, 2/452)

﴾20﴿ पर्दा करने में जितनी ज़ियादा तक्लीफ़ होगी उतना ही सवाब भी اِنْ شَآءَ اللّٰه ज़ियादा मिलेगा। (रिसाला : इस्लामी पर्दा, स. 17। बयानाते अ़त्तारिया, 2/460)

﴾21﴿ बाइ़ज़्ज़त और ह़यादार औ़रत के लिए उस की इ़स्मत यानी पाक दामनी सब से क़ीमती चीज़ है। (रिसाला : इस्लामी पर्दा, स. 23। बयानाते अ़त्तारिया, 2/466)

किताब "बयानाते अ़त्तारिया (जिल्द : 3)" से 15 मदनी फूल

﴾1﴿ हमारी ज़िन्दगी के लम्ह़ात भी अनमोल हीरे हैं अगर इन को हम ने बेकार ज़ाएअ़ कर दिया तो ह़सरत व नदामत के सिवा कुछ हाथ न आएगा।

(रिसाला : अनमोल हीरे, स. 3। बयानाते अ़त्तारिया, 3/19)

﴾2﴿ ज़िन्दगी का जो दिन नसीब हो गया उसी को ग़नीमत जान कर जितना हो सके उस में अच्छे अच्छे काम कर लिए जाएं तो बेहतर है।

(रिसाला : अनमोल हीरे, स. 7। बयानाते अ़त्तारिया, 3/23)

﴾3﴿ हमें इस बात का एह़सास हो या न हो मगर येह ह़क़ीक़त है कि हम अपनी मौत की मन्ज़िल की त़रफ़ निहायत तेज़ी के साथ रवां दवां हैं।

(रिसाला : अनमोल हीरे, स. 7। बयानाते अ़त्तारिया, 3/23)

﴾4﴿ कामयाब व अ़क़्लमन्द वोही है जो दूसरों को मरता देख कर अपनी मौत याद करे और क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी कर ले।

(रिसाला : वीरान मह़ल, स. 11। बयानाते अ़त्तारिया, 3/54)

﴾5﴿ किसी नेकी को छोटी समझ कर नहीं तर्क करना चाहिए क्या पता वोही छोटी नज़र आने वाली नेकी अल्लाह पाक की बारगाह में क़बूल हो जाए।

(रिसाला : नहर की सदाएं, स. 8। बयानाते अ़त्तारिया, 3/76)

﴾6﴿ लज़ीज़ ग़िज़ाएं मज़े ले ले कर खाने वालों को जहन्नम की भयानक ग़िज़ाओं को नहीं भूलना चाहिए। (रिसाला : नहर की सदाएं, स. 17। बयानाते अ़त्तारिया, 3/85)

﴾7﴿ इ़यादत के मौक़े पर मरीज़ या दुखी शख़्स के सामने अपने चेहरे पर रंजो ग़म की कैफ़ियत नुमायां कीजिए।

(रिसाला : नहर की सदाएं, स. 21। बयानाते अ़त्तारिया, 3/89)

﴾8﴿ मरीज़ के घर वालों से भी इज़्हारे हमदर्दी कीजिए और जो ख़िदमत या तआ़वुन कर सकते हों कीजिए। (रिसाला : नहर की सदाएं, स. 21। बयानाते अ़त्तारिया, 3/89)

﴾9﴿ मरीज़ के पास जा कर उस की त़बीअ़त पूछिए और उस के लिए सेह़त व आ़फ़ियत की दुआ़ कीजिए।

(रिसाला : नहर की सदाएं, स. 21। बयानाते अ़त्तारिया, 3/89)

﴾10﴿ मरीज़ से अपने लिए दुआ़ करवाइये कि मरीज़ की दुआ़ रद नहीं होती।

(रिसाला : नहर की सदाएं, स. 21। बयानाते अ़त्तारिया, 3/89)

﴾11﴿ दौलत से दोस्त तो मिल सकते हैं मगर वफ़ा नहीं मिल सकती।

(रिसाला : पुर असरार भिकारी, स. 14। बयानाते अ़त्तारिया, 3/196)

﴾12﴿ दौलत सबबे हलाकत तो हो सकती है मगर उस के ज़रीए मौत नहीं टाली जा सकती। (रिसाला : पुर असरार भिकारी, स. 14। बयानाते अ़त्तारिया, 3/196)

﴾13﴿ दौलत से शोहरत तो ह़ासिल हो सकती है मगर इ़ज़्ज़त ह़ासिल नहीं हो सकती। (रिसाला : पुर असरार भिकारी, स. 14। बयानाते अ़त्तारिया, 3/196)

﴾14﴿ अपने आप को क़ाबिल समझना येही ना क़ाबिलिय्यत की सब से बड़ी दलील है। (रिसाला : काले बिच्छू, स. 8। बयानाते अ़त्तारिया, 3/223)

﴾15﴿ अपने आप को जो शैत़ान से मह़फ़ूज़ समझे बस समझो उस पर शैत़ान कामयाब हो चुका।

(रिसाला : क़ौमे लूत़ की तबाहकारियां, स. 24। बयानाते अ़त्तारिया, 3/389)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

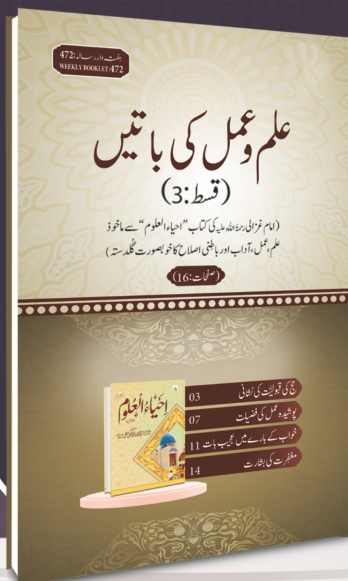

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025